सुशील कुमार सिंह के नाटकों में राजनीतिक चेतना

नाटक एक दुधारी विधा है जिसमें साहित्य भी है और रंगमंच भी । लेकिन नाटककार का माध्यम केवल भाषा है । इसलिए एक नाटककार के लिए असली चुनौती एक ऐसी भाषा का अन्वेषण है जो इन दोनों प्रयोजनों को एक साथ साध सके । रंगमंच का बुनियादी आधार अभिनय है । इस दृष्टि से नाटक की साहित्यिक अर्थात् भाषागत उत्कृष्ठता की कसौटी यह भी है कि उसमें अभिनय के लिए कितनी सम्भावनाएँ हैं । साहित्य की दृष्टि से नाटक की श्रेष्ठता इस बात में है कि वह कितनी जटिल मानवीय स्थितियों द्वन्द्वों, मन की सूक्ष्म परतों और अन्तद्वन्द्वों की आवेगमय मार्मिकता को उभार पाता है । जो नाटक इस हद तक ऐसा कर पाता है, उसमें अभिनय की सम्भावनाएँ भी उतनी अधिक निहित होती हैं क्योंकि जटिल स्थितियों और चरित्रों और उसके सूक्ष्म अन्तर्द्वन्द्वों को सम्प्रेषित कर पाने में ही अभिनय की उत्कृष्टता सिद्ध होती है ।[1]

भारतमुनि ने अपने 'नाटयशास्त्र' में एक स्थल पर कहा है कि 'न कोई ऐसा ज्ञान है, न शिल्प है, न कला है, न विद्या है, न योग है जो नाटक में न देखा जाता है ।' नाटक में इन सब को समाहित करके इसके लोकधर्मी स्वरूप की परिचायक है । नृत्य, संगीत, स्थापत्य और अन्य कलाएँ इसमें घुली-मिली रहती हैं ।[2]

साहित्य और राजनीति :

साहित्य और राजनीति का आधुनिक जीवन में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है । सैद्धान्तिक दृष्टि से दोनों का लक्ष्य समाज को स्वस्थ एवं विसंगति विहिन बनाना है । राजनीति सामाजिक यथार्थ का अंग है और साहित्य सामाजिक यथार्थ का रागात्मक अभिव्यक्ति है। मानव-कल्याण के उद्देश्य की पूर्ति हेतू दोनों को अलग नहीं किया जा सकता है । आज के दौर में मनुष्य और साहित्य को राजनीतिक प्रभाव से दूर रख पाना नामुकिन सा लगता है । 'राजनीति किसी भी देश की वह धुरी होती है जिस पर किसी भी राष्ट्र का सम्पूर्ण जनजीवन घूमता है । राज्य-संचालन की नीति राजनीति कहलाती

---

1. डॉ० वीणा गौतम, हिन्दी नाटक: रंगानुशासन एवं प्रायोगिक नवोन्मेष, पृ० 263
2. डॉ० नरेन्द्र मोहन, समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच, पृ० 11

है । राज्य को सुव्यवस्थित चलाने के लिए किन्हीं मर्यादाओं, नैतिकताओं, नियमों और समय के अनुसार व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है । यही मर्यादा एवं नियम आदि राजनीति के आधार पर स्तम्भ होते हैं ।[3]

आधुनिक साहित्यकारों में सुशील कुमार सिहं का नाम अधिक लोकप्रिय है । उन्होंने राजनीति विश्लेषण के आधार नाटकों को रूपान्तरित किया है । वो साहित्य क्षेत्र चमकने वाला विशालकाय सितारा है जो भू तल के मानव जगत को अभिप्रेरित कर उसके संज्ञान में वृद्धि कर उसके सर्वांगीण पहलुओं का विश्लेषणात्मक रूप का अध्ययन करता है।

अपने नाट्य सृजन में विशेष रूप से 'सिंहासन खाली है' एवं 'नागपाश' के माध्यम से नाटककार ने राजनीति का घिनौनेपन व आम जनता की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है । उसके नाट्य-साहित्य में राजनीतिक की भ्रष्टता एवं उसके नग्न पहलू को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने की सार्थक कोशिश की गई है । इनके प्रत्येक नाटक चाहे वह 'नागपाश' हो या 'सिहांसन खाली है' हो गुड़बाय स्वामी हो या 'आज नहीं तो कल' हो सभी में समसामयिक राजनीतिक जीवन के संदर्भो का ग्रहण अत्यन्त व्यापक रूप में हुआ है ।

'आज नहीं तो कल' की भांति 'नागपाश' में भी आपातकालीन स्थिति को अभिव्यंजित किया है । यहां स्त्री इन्दिरा गान्धी का प्रतीक रूप है तथा स्त्री का पुत्र युवराज, संजय गान्धी का । एक दो, तीन, चार और पांच-स्त्री (जो सत्ता की प्रतीक हैं) के विपक्ष की भूमिका में खड़ी हैं । स्त्री इन पांचों पात्रों की निरन्तर बढ़ रही गतिविधियों पर 'उनके चारों और घूमकर उन्हें बांधने का मूकभिन्य करती हुई प्रतिक्रिया व्यक्त करती है - ''तुम्हें बांधना होगा एक ऐसे खुबसूरत किन्तु मजबूत नागपाश से जिसके बन्धन में रहकर तुम मनमानी करने से तौबा करो .....''[4] स्त्री की भूमिका भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के समान्तर है । श्रीमती गान्धी ने भी अपने विपक्ष के सभी

[3]. डॉ० ममता, साठोत्तर हिन्दी नाटक और राजनीति, पृ० 2

[4]. सुशील कुमार सिंह, नागपाश, पृ० 28

प्रमुख नेताओं का सम्पूर्ण क्रान्ति के रास्ते समता न्याय एवं भ्रष्टाचार मुक्त समाज की मांग को आपात्काल लागू करके कुचल दिया था ।

'अगर बचाना है अपनो को
होंठ सिले जाए सूजों से
जकड़ लौह जंजीरों में
ठूंस दिया जाए विरोध को
अन्ध घुप्प अंधेरे में...[5]

उन दिनों में सत्ता की दमनकारी नीतियों एवं क्रूरता से बचने केलिए चुप्पी धारण कर लेना ही सबसे बड़ा महामन्त्र सिद्ध हुआ । सत्ताधीश ने देश, व्यक्ति, सीमाओं, व्यक्तियों व कुर्सी के लिए खतरा बने' प्रत्येक व्यक्ति एवं वस्तु को नागपाश से कस डाला । आपात्काल के दौरान समाज में नसबन्दी का आंतक बुरी तरह फैल गया । इन्हीं दिनों सर्वाधिक घृणित कदम आन्तरिक सुरक्षा अनुरक्षण अधिनियम (सीसा) का उपयोग किया जाता था । जिसका इस्तेमाल बिना कोई अभियोग चलाये एक लाख से अधिक लोगों को हिरासत में लेने के लिए किया गया था । नागपाश में नाटककार के सत्ता द्वारा इस तरह की जाने वाली ज्यादतियों को अभिव्यंजित करने की कोशिश की है ।

भारतीय राजनीति में व्याप्त अवसरवादिता का एक छोटा सा नमूना है । मोराजी जी देसाई द्वारा सत्तासीन होने के बाद की गई जयप्रकाश नारायण की उपेक्षा सर्वविदित है। नाटक में मोराजी द्वारा लोक नायक की उपेक्षा को अपने चरित्र के माध्यम से अभिव्यंजित करता है –

'लोकनायक का रोल खत्म
यह लोक हमने सम्हाल लिय है
उनसे कह दो वह परलोक सिधार जाए ।'[6]

---

5. सुशील कुमार सिंह, नागपाश, पृ० 99
6. सुशील कुमार सिंह, 'आज नहीं तो कल', प० 26

नाटककार ने सत्ता में आने बाद देश को चलाने अर्थात् प्रधानमन्त्रितत्व के लिए होने वाले संघर्ष को 'गाड़ी कौन चलाए' द्वारा अभिव्यंजित किया है।

''इतने ज्यादा दल शामिल हो गए हैं कि बाद में यह तय करना मुश्किल हो जाएगा की शासन की गाड़ी कौन चलाए ।''[7]

'सिहांसन खाली है'' नाटक में पक्ष और विपक्ष के सत्ता प्रेम व शासक वर्ग की कुर्सी प्राप्ति के लिए कुछ भी कर गुजरने की प्रवृत्ति को दर्शाने के लिए नाटककार ने नाटक के भीतर की संयोजना की है । इस नाटक में सूत्राधार खाली पड़े सिहांसन के लिए उपयुक्त पात्र की तलाश में जुटा हुआ है । वर्तमान सन्दर्भ में राजनीति के विकृत रूप की ओर संकेत हुए नाटककार सूत्राधार के माध्यम से सिंहासन के संदर्भ में कहता है कि ''यह आपको सर्वशक्तिमान सत्ता सम्पन्न बनाएगा.... और आप इस पर बैठकर सत्य, अहिंसा और न्याय को मनचाहे रूप से परिभाषित कर सकेंगे ।''[8]

आज मनुष्य नेताओं की गिरगीट प्रवृत्तियों के कारण संदेह के घेरे में घिरा रहता है । एक वो समय था नेताओं के पोस्टरों और उनके आदर्शों की पूजा किया करते हैं । उनके सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतारना भी सौभाग्य समझा जाता था । परन्तु आज के समय में कोई नेता ऐसा नहीं है जो जनता को चिकनी-चुपड़ी बातों से न रिझाता हो। अनेक प्रकार झूठे आसवासन परोसकर अपने स्वार्थों का मार्ग प्रशस्त करते हैं । नेताओं ने उनको झूठे सपने दिखाकर उनकी भावनाओं को गहरे तक आहत किया है । नेताओं के लम्बे-लम्बे भाषाणों पर व्यंग्य में प्रस्तुत करते हुए सुशील कुमार सिंह जी कहते हैं -

''मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि उन्नति और तरक्की के लिए नये-नये कल-कारखानों का उद्घाटन करूंगा । भारी लागतों के बड़े-बड़े बांधों का शिलान्यास करूंगा । सूख, बाढ़, अकाल और भूकम्प से पीड़ित क्षेत्रों का दौरा करूंगा.....। टैक्स अथवा करो का नामोनिशान मिटा दूंगा । विदेशों से भारी सहायता प्राप्त करूंगा.....धरती पर स्वर्ग उतार दूंगा.....अपने अनमोल वचनों की

---

7. वही, पृ० 16
8. सुशील कुमार सिंह, सिहांसन खाली है, पृ० 10

भीनी-भीनी फुहार से देश की गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी और तमाम समस्याएँ पलक झपकेते सुलझा दूँगा ।''[9]

नेता और उसके अन्य लोग भी सिहांसन प्राप्ति के लिए आपस में कुत्ते बिल्लियों की तरह लड़ने लग जाते हैं और यही लड़ाई अपने विकृत रूप में राजनीतिक हत्याओं एवं षड़यन्त्रों का रूप ले लेती है । - ''सत्ता के साथ विरोध जन्म लेता है और विरोध संघर्ष, षड़यन्त्र और हत्याओं की रचना करता है । यही तो हमेशा से होता आया है ।

एक : 'हम सिंहासन चाहते हैं ।

दो : नहीं मिलेगा तो शक्ति का प्रयोग भी करेंगे ।

तीन : हमारी आस्था असत्य में है ।

एक : हिंसा पर हमें विश्वास है ।

दो : अन्याय पर हमें गर्व है ।

तीन : हम सिहांसन चाहते हैं ।'[10]

इस नाटक के माध्यम से वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों, कुर्सी के लिए हो रही महाभारत एवं चिरकाल से शासक वर्ग के शिकंजे में फंसी पीड़ा से कराहती जनता का सशक्त चित्रण किया है ।

सुशील कुमार सिंह के ही अन्य नाटक 'बापू की हत्या हजारवीं बार' में 'हरिजन' शब्द के राजनीतिक महत्व को दर्शाया है । किस तरह जाति के आधार पर वोट की राजनीति होती है । जनता की भावनाओं के आधार बनकर सत्ता की कुर्सी को प्राप्त कर अपने स्वार्थों को पूरा किया जाता है । आलोच्य नाटक में एक तिलकधारी ब्राह्मण वैष्णव, जो एक पवित्र जलपात्र लिये हैं । उस ब्राह्मण से वह 'हरिजन' पीने का पानी मांगता है। ब्राह्मण उसे पीने के लिए पानी देने की बजाय सीताराज सीताराम कहते हुए अपने मार्ग पर जल छिड़कता है, क्योंकि वह मार्ग उन पागलों द्वारा ब्राह्मणों को दण्डवत् प्रणाम करने के कारण अपवित्र हो गया ।

---

[9]. सुशील कुमार सिंह, सिहांसन खाली है, पृ० 13

[10]. सुशील कुमार सिंह, सिहांसन खाली है, पृ० 21

''तुम जैसे अछूतों को छूकर अपना धर्म मैं भ्रष्ट नहीं कर सकता, नर्कगामी नहीं बन सकता ।''[11]

नाटककार ने इस तरह राजनीति में जातिवाद के समीकरण का बेलोस चित्रण किया है । हालत यह है कि राजनीतिज्ञों को अपनी जाति बहुल इलाके से चुनाव लड़ना ही प्रिय लगता है । क्योंकि जाति संरचना राजनीतिज्ञों की दृष्टि में एक ऐसा संगठनात्मक समूह है, जिसके बल पर सत्ता के गलियारे में आसानी से पहुंचा जा सकता है ।

प्राय: शासकवर्ग सत्तालोलुप होने के साथ-साथ वासनालोलुप भी होता है । सिंहासन खाली है नाटक में सुशील कुमार सिंह ने शासक की इस कामुक प्रवृत्ति को भी अभिव्यंजित किया है । इन पंक्तियों के माध्यम से दर्शाया है:-

नेता : औरत ..... तुम कहां जा रही हो ।

महिला : आपका अनुग्रह प्राप्त करने, महाराज

नेता : औरत तुम कहीं नहीं जाओगी, मेरे पास रहोगी ।

महिला : (तनिक भयभीत होकर) क्यों?

नेता : इसलिए कि तुम मुझे पंसद हो । मैं तुम पर विशेष आग्रह करूंगा ।[12]

इस प्रकार नाटककार ने वासनासिक्त नेता के असली चेहरे से समाज को परिचित कराने का सार्थक प्रयास किया है । महिला पर किए गए शोषण को उनकी कमजोरियों का लाभ उठाते हैं ।

'बापू की हत्या हजारवीं बार' नाटक में नाटककार ने एक नितान्त नए मुद्दे भाषागत विवाद पर प्रकाश डाला है । आलोच्य नाटक में गांधी जयन्ती के अवसर पर एकत्रित हुए समाज की गान्धी जी के प्रति आस्था और विश्वास बहुत जल्दी विपरीत साबित होता है । गान्धी जी यह मानते हैं

---

[11]. सुशील कुमार सिंह, बापू की हत्या हजारवीं बार', पृ० 1

[12]. सुशील कुमार सिंह, सिंहासन खाली है, पृ० 37

कि राष्ट्रभाषा राष्ट्र का प्राण हैं । हम सब की भाषा भी एक ही होनी चाहिए क्योंकि हमारी एकता का प्रतीक है ।

आजादी की स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर सुशील कुमार सिंह जी ने एक ओर नाटक 'अलख आजादी की' की रचना की । जिसके माध्यम से भ्रष्टाचार, घोटालों व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों पर तीखी चोट को व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया है । इस नाटक का मंचन लखनऊ, कानपुर, आगरा, मेरठ, सहारनपुर, झांसी प्रतापगढ़, गाजियाबाद आदि उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों में लगभग पंद्रह बार मंजित किया जा चुका है और हर बार दर्शकों की अपार प्रशंसा मिली, समाचार पत्रों ने भी खुले मन से इस नाटक की सरहाना की है ।

'सोने की चिड़िया है भारत,
किस्सा ये मशहूर था ।
सारी दुनिया के माथे पर,
जैसे थे सिन्दूर था ।
गरम मशाला, रेशम, कपड़ा
यहाँ का खूब मशहूर था ।[13]

जिसकी प्राचीन भारत इतिहास को बड़े सुन्दर ढंग से व्याख्या की गई है तथा आजादी के लिए किया गया संघर्ष व बलिदान को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत किया गया।

आजादी के अलख जगी थी
अठारह सौ सत्तावन में
गाँव-गाँव रोटी पहुंची थी
अठारह सौ सत्तावन में ।[14]

[13]. सुशील कुमार, अलख आजादी की, पृ० 25
[14]. सुशील कुमार, अलख आजादी की, पृ० 25

स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रथम संग्राम 1857 में लड़ा गया उसके बाद लगातार स्वराज प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास किये गए । आजादी पाने के लिए कितने शहीदों ने अपने प्राणों का न्योछावर किया है ।

आजादी की.....कीमत हमने,

कितनी बड़ी चुकाई है ।

देश के दो टुकड़े हुए,

लाखों ने जान गँवाई है ।[15]

'अलख आजादी की' सुशील कुमार जी का सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक है । जिसको सबसे अधिक पसन्द किया गया ।

निष्कर्ष :

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि ''हिन्दी नाटक को राजनीतिक, व्यंग्य, समसामयिक प्रश्नों, जनता की पीड़ा और बड़े दर्शक व पाठक समूह से जोड़ने में सुशील कुमार का नाम लिया जाएगा।''[16] व्यवस्था के खोखले ढांचे की पोल खोलने का प्रयास किया है। लूटपाट, रक्तपात, दल-बदल, भ्रष्टाचार, चुनावी हथंकण्डे, अवसरवादिता, सत्ता लोलुपता एवं विकृत गांन्धीवादी मूल्यों के संदर्भ में नाटककार ने समय-सन्दर्भ को पहचानने की कोशिश भी की है । तत्वकालिक उत्तेजना में लिखे जाने के कारण, रंगमंचीय दृष्टि से इनके नाटक बेहद सफल रहे हैं । सच तो यह है कि इनके अधिकांश नाटकों में राजनीतिक बोध इतना मूर्त है कि किसी भी तरह की अटकल लगाने की जरूरत नहीं है । अगर नाट्य साहित्य में राजनीतिक चेतना का अध्ययन करना है । वह सुशील कुमार सिहं जी के साहित्य में सबसे जीवन रूप से देखा जा सकता है जो कि कोरी वास्तविकता का प्रतिरूप है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

15. वही, पृ० 84
16. गिरीश गोस्वामी, समकालीन हिन्दी नाट्ककार, पृ० 221

1. डॉ० वीणा गौतम, हिन्दी नाटक : रंगानुशासन एवं प्रायोगिक नवोन्मेष।
2. डॉ० नरेन्द्र मोहन, समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच ।
3. डॉ० ममता, साठोत्तर हिन्दी और राजनीति ।
4. सुशील कुमार सिंह, 'नागपाश' ।
5. सुशील कुमार सिंह, आज की तो कल ।
6. सुशील कुमार सिंह, सिहांसन खाली है ।
7. सुशील कुमार सिंह, बापू की हत्या हजारवीं बार ।
8. सुशील कुमार सिंह, अलख आज़ादी की ।
9. गिरीश गोस्वामी, समकालीन हिन्दी नाटककार

शोधकर्त्री
ममता देवी
हिन्दी-विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र